International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 13-15

हिन्दी गज़ल सम्राट दुष्यंत कुमार

सोनिया राठी

एम.ए.(स्वर्ण पदक विजेता), यु.जी.सी.नेट, एम.फिल, पीएच.डी.(शोधार्थी), जैन विश्वविद्यालय, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत।

सरांश

दुष्यंत कुमार ने उर्दू के सटीक से सटीक शब्दों का उपयोग कर के हिन्दी गज़ल को मजबूती प्रदान की। उर्दू शेरों में फारसी व अरबी शब्दों के साथ कई हिन्दी शब्द भी हैं, वहीं हिन्दी गज़लों में उर्दू, फारसी, अरबी शब्दों के साथ संस्कृत व हिन्दी के शब्द स्वतंत्रतापूर्वक इस्तेमाल हुए हैं। भाषाएँ सीमा बना कर तलवारों या बंदूकों से अपने–अपने शब्दों की रक्षा नहीं करती, वरन मित्रता पूर्वक आदान–प्रदान करती हैं। उनके द्वारा जलाई गई हिन्दी गज़ल की मशाल कई अन्य शायरों ने हाथ में ले कर गज़ल यात्रा को आगे बढ़ाया। जहाँ उर्दू की शायरी तीन चार शताब्दियों तक इश्क से बाहर नहीं आ पाई, वह केवल साकी, बज्म, तगाफुल, मकतबे–इश्क, शराब, सागर, बुलबुल, सैयाद, कफस आदि में कैद रही, गमे–जानाँ वाली शायरी ही अधिक पली–पनपी, वहीं दुष्यंत ने शायर को सीधे व्यवस्था से टकराना सिखाया। अनेक युवा शायर तक दुष्यंत कुमार की विरासत सीने से लगा कर गज़ल को नित नए आकाशों और जमीनों तक ले जा रहे हैं। एक शायर के रूप में दुष्यन्त कुमार अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटे। समाज को जागृति प्रदान करने के लिए भी उनकी लेखनी सदैव ज्वलनशील रही। उन्होंने भले ही निराशा एवं क्रोध का अधिकाधिक चित्रण किया लेकिन अंततः उनका स्वर आशावादी ही रहा। हिन्दी कविताओं में कबीर के बाद इतना अक्खड़पन केवल दुष्यन्त कुमार की ही रचनाओं में उभरकर सामने आया। यथार्थवादी गज़लों के साथ ही दुष्यंत कुमार का युग आरंभ होता है।

मूल शब्द: उर्दू, फारसी, अरबी, सम्राट दुष्यंत कुमार

प्रस्तावना

'साये में धूप' से उनको विशेष पहचान मिली, जिसमें गजलों का आक्रामक तेवर अन्दर तक तिलमिला देने वाला है। देशभक्तों ने आजादी के लिए इतनी कुरबानियां दी थीं कि देश का प्रत्येक व्यक्ति शान्ति और सुख से सामान्य जीवन जी सके, किन्तु राजतन्त्र एवं प्रशासन तन्त्र ने आम आदमी की ऐसी दुर्दशा की है। उन्होंने इतने अल्प समय में भी नाटक, एकांकी, रेडियो नाटक, आलोचना तथा अन्य विधाओं पर अपनी सशक्त लेखनी चलायी। उनकी रचनाओं में 'सूर्य का स्वागत', 'आवाजों के घेरे में', 'एक कण्ठ विषपायी', 'छोटे–छोटे सवाल', 'साये में धूप', 'जलते हुए वन का वसंत', 'आगन में एक वृक्ष', 'दुहरी जिन्दगी' प्रमुख हैं। वे एक ऐसे कवि थे जो साहित्य के साथ गजल विधा पर भी पूरी पकड़ रखते थे। दुष्यंत कुमार की गजलों की मूलतः दो उपलब्धियां रहीं। एक तो यह कि उन्होंने शायरी को मुल्क से जोड़ा और मुल्क की हालिया परिस्थितियों पर शायर की नजर केंद्रित की। ऐसा नहीं है कि उससे पहले राष्ट्रीय काव्य लिखा ही नहीं गया। दिनकर जैसे राष्ट्र कवि रहे और आजादी के संघर्ष के समय रामप्रसाद बिस्मिल जैसे शायर रहे जो 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' जैसी अमर गजलें लिख गए। दुष्यन्त कुमार के विषय में अगर कहा जाए कि उन्होंने हिन्दी रचनाकारों के लिए हिन्दी में गजल का एक रास्ता खोला, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने अपनी गज़लें उर्दू बहरों में लिखी और हिन्दी शब्दों के साथ उर्दू शब्दों का भी जमकर प्रयोग किया। परंतु इस सब के बाद दुष्यन्त कुमार की गजलों का महत्त्व कम नहीं हो जाता। एक आम आदमी की जुबान बनकर दुष्यन्त ने जिस पीड़ा को कलमबद्ध किया वह कोई आसान काम नहीं था। भाषा के बारे में वो कितने ईमानदार थे, यह तो उनकी 'साए में धूप' पर लिखी भूमिका से ही पता चलता है। उन्होंने स्पष्ट किया 'मैं उस भाषा में लिखता हूं जिसे मैं बोलता हूं'। जब हिन्दी और उर्दू अपने अपने सिंहासन से उतरकर आम आदमी के पास आती हैं तो इनमें फर्क करना मुश्किल हो जाता है।

दुष्यन्त कुमार की गज़लें पढ़कर ऐसा लगता है कि वो हिन्दी से कहीं ज्यादा हिन्दुस्तान की गज़लें है। जिनमें उस समय के आम आदमी की पीड़ा, संघर्ष, एवं परिस्थितियों से जूझते रहने का चित्रण किया है। अपने अशआर में बारूद भरकर शायरी के एक ऐसे स्वरूप को दिखाया जिससे हिन्दी साहित्य में गजल का एक नया रूप प्रकट हुआ। जिसे कहीं लचर छंद विधान के आधार पर अस्वीकार किया गया तो कहीं उसकी बेबाकी को सलाम ठोका गया। लेकिन दुष्यन्त कहीं किसी भी आलोचना की परवाह नहीं की, उनका सारा संघर्ष उनकी शायरी में प्रतिबिंबित हुआ है। वो एक जगह लिखते हैं–

कहीं पे धूप की चादर बिछा के बैठ गए
कहीं पे शाम सिराहने लगा के बैठ गए

वह बेबसी एवं अभाव को भी आशावादी स्वर देते हैं

न होगा कमीज तो पावों से पेट ढक लेंगे
ये लोग कितने मुनासिब हैं सफर के लिए

दुष्यन्त कुमार का मुख्य स्वर दहशत से भरे समाज का चित्रांकन करना रहा उन्हें आजादी की वो आबो हवा रास नहीं आई। बहुत गुस्से में उन्होंने लिखा–

यहां तो सिर्फ गूंगे और बहरे लोग बसते हैं,
खुदा जाने यहां पर किस तरह जलसा हुआ होगा
इस शहर में अब कोई बारात हो या वारदात,
अब किसी भी बात पर खुलती नहीं हैं खिड़कियां

दुष्यन्त कुमार देश की तत्कालीन परिस्थितियों से बहुत नाराज थे, और यह बात उन्होंने प्रखर स्वर में कही–

आप आएं बड़े शौक से आएं यहां
ये मुल्क देखने लायक तो है हसीन नहीं
कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए
मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिन्दुस्तान है

दुष्यन्त कुमार ने ऐसी ही स्थितियों का आईना बनने की हमेशा कोशिश भी की और अपने अक्खड़पन को मूर्त रूप भी दिया। उनकी नाराजगी इन शेरों में स्पष्ट जाहिर होती है–

हालाते जिस्म सूरते जां और भी खराब
चारों तरफ खराब यहां और भी खराब
खंडहर बचे हुए हैं इमारत नहीं रही
अच्छा हुआ कि सर पे कोई छत नहीं रही

एक शायर के रूप में दुष्यन्त अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटे। समाज को जागृति प्रदान करने के लिए भी उनकी लेखनी सदैव ज्वलन शील रही। उन्होंने भले ही निराशा एवं क्रोध का अधिकाधिक चित्रण किया लेकिन अंततः उनका स्वर आशावादी ही रहा। यह उनकी हुंकार थी–

हो गई है पीर पर्वत–सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,

दरख्तों के साए में भी धूप झेलते हुए दुष्यन्त कुमार ने हर तरह का कटु सत्य जनमानस में प्रवाहित किया। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ऐसा अद्‌भुत शायर न तो कभी हुआ और भविष्य में शायद ही कभी हो। हिन्दी कविताओं में कबीर के बाद इतना अक्खड़पन केवल दुष्यन्त कुमार की ही रचनाओं में उभरकर सामने आया। दुष्यन्त का अंदाजे बयां सबसे जुदा था। वास्तव में यह हिन्दी पाठकों का सौभाग्य है कि उन्हें दुष्यन्त को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। उनकी समस्त साहित्यिक सोच एवं संघर्ष शायद इसी शेर से प्रकट होता है–

दस्तकों का अब किवाड़ों पर असर होगा जरूर
हर हथेली खून से तर और ज्यादा बेकरार

उनकी पीड़ा में हर किसी की पीड़ा झलकती है। झूठ फरेब, धोखाधड़ी, भौतिकवाद को उन्होंने अपनी गजलों में अनेक जगह प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। जिसके कुछ सटीक उदाहरण हैं ये शेर–

जरा सा तौर तरीकों में हेर फेर करो,
तुम्हारे हाथ में कॉलर हो आस्तीन नहीं

स्वातंर्त्योत्तर भारत में आम आदमी की पीड़ा, शासकों का दोहरा चरित्र, चारित्रिक पतन, देश की दुर्दशा को देखकर कवि चुप नहीं रहना चाहता है क्योंकि उन्हीं के शब्दों में–

मुझमें बसते हैं करोड़ो लोग, चुप रही कैसे?
हर गजल अब सल्तनत के नाम बयान है।

दुष्यंत कुमार ने कुछ नगण्य संख्या की गजलों में कुछ गजल की परम्परा को छोड़ने का अति–क्रमण भी किया है–

भूख है तो सब्र कर रोटी नहीं तो क्या हुआ,
आजकल दिल्ली में है जेरे बहस ये मुद्दआ
गिड़गिड़ाने का यहाँ कोई असर होता नहीं
पेट भर कर गालियाँ दो आह भर कर बद–दुआ
इस अंगीठी तक गली से कुछ हवा आने तो दो
जब तलक खिलते नहीं हैं कोयले देंगे धुंआ

दुष्यंत की दृष्टि बहुत विस्तृत है। वह हर घर के लिए चराग की बात करते हैं। चराग का मतलब रोशनी से है और रोशनी का मतलब सुख, समृद्धि, शांति और समझदारी से है। हैरत की बात है कि आज चराग पूरे शहर के लिए यानि एक बहुत बड़े वर्ग के लिए मयस्सर नहीं है। यहाँ दुष्यंत की वर्ग चेतना बहुत स्पष्टता से मुखरित होती है लेकिन दुष्यंत इस स्थिति से हताश नहीं हैं–

वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता
मैं बेकरार हूँ आवाज में असर के लिए।

दुष्यंत कुमार की चेतना, मूल्य हीनता, सियासती दाँव–पेंच, सिद्धांतहीनता और प्रतिगामी स्थितियों को आरपार चीरती नजर आती है। उनकी संवेदनशीलता हर बार और अधिक वेधक हो उठती है–

कैसे–कैसे मंजर सामने आने लगे हैं
गाते–गाते लोग चिल्लाने लगे हैं।

देश और समाज की हर समस्या पर दुष्यंत की निगाह थी। वे उसे इंगित करने के साथ–साथ उस पर जरूरी ऐंगिल से करारी चोट करते थे। धर्मांधता और धर्म के ठेकेदारों पर जब वह यह कहते हैं, 'गजब है सच को सच कहते नहीं वो, कुरानों–उपनिषद खोले हुए हैं' तो वह कबीर जैसे क्रांतिकारी सुधारकों की पंक्ति में उनके समकक्ष जाकर खड़े हो जाते हैं। वह समाज में छाई चुप्पी के प्रति हमेशा आशंकित दिखे। वे हमेशा इसे तोड़ने की प्रेरणा देते दिखाई पड़े। अन्याय व संकट के प्रति चुप रहने वाला समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता। ऐसा समाज कभी आगे नहीं बढ़ सकता। वे इसे बखूबी जानते और कहते थे। उनकी यह पीड़ा उनकी गजलों में अक्सर छलक कर सामने आई। कभी वे 'इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात, अब किसी भी बात पर खुलती नहीं हैं खिड़कियाँ' कहकर अफसोस जताते हैं, कभी उनकी 'इस सिरे से उस सिरे तक सब शरीके–जुर्म हैं, आदमी या तो जमानत पर रिहा है या फरार' कहकर आज के हालात पर चुपचाप बैठकर जुल्म सहती पूरी जमात को ही वे कटघरे में खड़ा कर देते हैं। देश की गरीबी की चिंता तो हम सभी को होती है। लेकिन देशवासियों की तंगहाली के बारे में दुष्यंत का अंदाजे–बयाँ एकदम निराला था। पहले उन्होंने इस बदहाली पर यह कर चुटकी ली, 'इस कदर पाबंदी–ए–मजहब कि सदके आपके, जबसे आजादी मिली है मुल्क में रमजान है,' फिर वह पूरी ताकत से इस फटेहाली पर आक्रमण करते हैं, 'कल नुमाइश में मिला वो चिथड़े पहने हुए, मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिंदुस्तान है।'

दुष्यंत कुमार की गजलों में कहीं–कहीं बड़े ही चमत्कारपूर्ण प्रयोग व अनूठे बिंब दिखाई पड़ते हैं। ऐसे में उनकी बात का वजन कई गुना बढ़ जाता है। ऐसी पंक्तियाँ बार–बार पढ़ने और गुनगुनाने का मन करता है। जब वे कहते हैं, 'बच्चे छलाँग मार के आगे निकल गए, रेले में फँस के बाप बिचारा बिछुड़ गया' तो हमारे सामने नई

व पुरानी पीढ़ी के आज के अंतर्द्वंद्व अथवा प्रतिस्पर्धा की एक सजीव तस्वीर खड़ी हो जाती है। जब वे कहते हैं, 'दुख को बहुत सहेज के रखना पड़ा हमें, सुख तो किसी कपूर की टिकिया–सा उड़ गया,' तो वे हमारे लिए रहीम जैसे अविस्मरणीय कवि बन जाते हैं। दुष्यंत के इसी तरह के अनेक ऐसे बिंब हैं, जिनका नयापन हमें अपनी ओर बेहद आकर्षित करता है। 'इस तरह टूटे हुए चेहरे नहीं हैं, जिस तरह टूटे हुए ये आईने हैं' पढ़ते समय न तो हम दुष्यंत के अद्भुत काव्य–शिल्प के प्रति आश्चर्यचकित हुए बिना रह पाते हैं, और न ही चीजों को एक नए नजरिये से देखने की जरूरत के प्रति प्रभावित हुए बिना। आगे जब वह कहते हैं, 'जिस तरह चाहो बजाओ इस सभा में, हम नहीं हैं आदमी, हम झुनझुने हैं' तो हम समाज में अपनी भूमिका के प्रति विचार करने के लिए बाध्य हुए बिना भी नहीं रह पाते। वास्तव में इस प्रकार के व्यंग्य ही हमें तत्काल प्रतिरोध एवं संघर्ष करने के लिए प्रेरित करते हैं। दुष्यंत कुमार ने अपनी अधिकांश लोकप्रिय गजलें अंतिम समय में ही लिखीं। कहते हैं कि बुझते दिए की लौ तेज होती है। इन्हीं गजलों की वजह से दुष्यंत ने साहित्य में एक मुकम्मिल जगह बना ली। उनकी अंतिम समय की लिखीं गजलें न केवल बेइंतिहा लोकप्रिय हुई अपितु इन गजलों को एक जड़ व्यवस्था का तीव्र विरोध भी सहना पड़ा।

उपसहांर

दुष्यन्त कुमार समकालीन हिन्दी कविता के एक ऐसे हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने कविता, गीति नाट्य, उपन्यास आदि सभी विधाओं पर लिखा है। उनकी गजलों ने हिन्दी गजल को नया आयाम दिया। उर्दू गजलों को नया परिवेश और नयी पहचान देते हुए उसे आम आदमी की संवेदना से जोड़ा। उनकी हर गजल आम आदमी की गजल बन गयी है, जिसमें चित्रित है, आम आदमी का संघर्ष, आम आदमी का जीवनादर्श, राजनैतिक विडम्बनाएं और विसंगतियां। राजनीतिक क्षेत्र का जो भ्रष्टाचार है, प्रशासन तन्त्र की जो संवेदनहीनता है, वही इसका स्वर है। दुष्यन्त कुमार ने गजल को रूमानी तबियत से निकालकर आम आदमी से जोड़ने का कार्य किया है। दुष्यन्त कुमार हिन्दी कवियों में एक ऐसा नाम है जिसे हिन्दी गजल का प्रवर्तक माना जाता है। दुष्यन्त कुमार के विषय में अगर कहा जाए कि उन्होंने हिन्दी रचनाकारों के लिए हिन्दी में गजल का एक रास्ता खोला तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। दुष्यंत कुमार का सौंदर्य–बोध आधुनिक एवं नायाब था। वे चिकने–चुपड़े सौंदर्य के कायल नहीं थे। उन्हें गजलगो माना गया लेकिन वे सामान्यतः खूबसूरती और रोमांस की बातें करने वाले लोकप्रिय गजलकारों से भिन्न थे। दुष्यंत कुमार ने अपनी अधिकांश लोकप्रिय गजलें अंतिम समय में ही लिखीं। कहते हैं कि बुझते दिए की लौ तेज होती है। इन्हीं गजलों की वजह से दुष्यंत ने साहित्य में एक मुकम्मिल जगह बना ली। उनकी अंतिम समय की लिखीं गजलें न केवल बेइंतिहा लोकप्रिय हुई अपितु इन गजलों को एक जड़ व्यवस्था का तीव्र विरोध भी सहना पड़ा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आँगन में एक वृक्ष, दुष्यन्त कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
2. छोटे–छोटे सवाल, दुष्यन्त कुमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. साये में धूप, दुष्यन्त कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. आवाजों के घेरे, दुष्यन्त कुमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।